राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

पाठ का परिचय

संकलित पाठ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित विश्ववंदनीय रचना 'श्रीरामचरितमानस' से उद्धृत है। संकलित पाठ सीता-स्वयंवर प्रसंग से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम शिव का धनुर्भंग कर देते हैं। तत्पश्चात् परशुराम वहाँ आकर शिव-धनुष को खंडित देखकर आग-बबूला हो जाते हैं। विश्वामित्र के समझाने और राम की विनय से उनका क्रोध कुछ शांत होता है और वे राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंततः वहाँ से चले जाते हैं। इस संपूर्ण प्रकरण में राम, लक्ष्मण तथा परशुराम के मध्य जो संवाद होता है, उसी का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है। इसमें परशुराम की क्रोधभरी बातों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य-बाणों से देते हैं। वीर रस से परिपूर्ण व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शब्द-शक्ति का चमत्कार ही इस प्रसंग की विशेषता है।

कविताओं का भावार्थ

1. **नाथ संभुधनु .... सकल संसार।।**

भावार्थ– सीता स्वयंवर के समय श्रीराम द्वारा जनक जी के दरबार में शिवधनुष को भंगकर सीता के विवाह की शर्त पूरी की गई। इसी समय परशुराम जी जनक जी की सभा में पधारे। उन्हें शिवधनुष के टुकड़े पृथ्वी पर पड़े दिखाई दिए। इससे वे क्रोधित हो गए। परशुराम जी ने जनक जी से पूछा–यह शिवधनुष किसने तोड़ा है? परशुराम जी के क्रोधी स्वभाव को जानते हुए जामाता राम के अनिष्ट को सोचकर जनक जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब श्रीराम सभी को डरा हुआ जानकर परशुराम जी से बोले–

हे नाथ! शिव जी के धनुष को भंग करने वाला आपका ही कोई दास होगा। अब धनुष तो टूट ही गया, यदि कोई आज्ञा हो तो मुझसे कहिए। श्रीराम के मुख से यह बात सुनकर परशुराम जी और क्रोधित हो गए और कहने लगे कि सेवक वह होता है, जो सेवा का कार्य करे। यहाँ धनुष-भंग करके कोई सेवा का कार्य नहीं किया गया है। यह तो शत्रुता का काम करके लड़ाई का काम किया गया है। हे राम! जिसने इस शिव के धनुष को भंग किया है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। वह इस राजसभा में से निकलकर अलग खड़ा हो जाए, अन्यथा सभा में एकत्र हुए सभी राजा मेरे क्रोध का शिकार बनेंगे अर्थात् मारे जाएँगे।

परशुराम जी की बातों को सुनकर लक्ष्मण जी मुसकराने लगे और उनका अपमान करने के उद्देश्य से कहने लगे–लड़कपन में हमने बहुत-से धनुष तोड़े थे, किंतु हे विप्रवर आपने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया। इस धनुष पर आपकी इतनी ममता किस कारण है? लक्ष्मण जी की बातें सुनकर भृगु जी कुल के केतु अर्थात् परशुराम जी और क्रोधित होकर कहने लगे–हे राजपुत्र! तुम काल के वश में हो। इसलिए तुम जो कह रहे हो वह मुँह सँभालकर नहीं कह रहे हो। संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध शिव जी का यह धनुष क्या लड़कपन में तुम्हारे द्वारा तोड़े गए धनुषों के समान है?

2. **लखन कहा .... मोर अति घोर।।**

भावार्थ– परशुराम जी की बात सुनकर लक्ष्मण जी हँसकर कहने लगे–हे देव! सुनिए, मेरी समझ से तो सभी धनुष एकसमान हैं। इस पुराने धनुष के तोड़ने से हमें क्या लाभ या हानि होती, श्रीरामचंद्र जी ने इसे नया समझकर धोखे से देख लिया, किंतु यह तो उनके छूते ही टूट गया। इसमें श्रीराम का किसी प्रकार भी दोष नहीं है। हे मुनि! बिना कारण ही आप किसलिए क्रोधित हो रहे हैं?

परशुराम जी अपने फरसे की ओर देखकर लक्ष्मण जी से कहने लगे–हे दुष्ट! तुम मेरे स्वभाव के विषय में नहीं जानते हो। मैं तुम्हें बालक समझकर नहीं मार रहा हूँ। क्या तुम मुझे केवल मुनि ही समझते हो? मैं बालब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। सारा विश्व जानता है कि मैं क्षत्रियकुल के शत्रु के रूप में जाना जाता हूँ। अपनी भुजाओं के बल पर मैंने पृथ्वी को अनेक बार राजाओं से रहित कर दिया और उसे ब्राह्मणों को दिया है अर्थात् पृथ्वी पर ब्राह्मणों का राज्य स्थापित कर दिया है। हे राजपुत्र! सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले इस फरसे को देख। तुम तो अपने माता-पिता के विषय में सोचो; अर्थात् यदि तुम मेरे क्रोध के शिकार हो गए तो बेचारे तुम्हारे माता-पिता क्या करेंगे? मेरा फरसा बड़ा भयानक है इसने गर्भ में पल रहे बच्चों को भी मारा है, अर्थात् यह बहुत निर्दयी है।

3. **बिहसि लखनु .... बोले गिरा गंभीर।।** *(CBSE 2016)*

भावार्थ– परशुराम जी की बातें सुनकर लक्ष्मण जी हँसकर कोमल शब्दों में उनसे कहने लगे–हे मुनिवर! तो आप स्वयं को महान् योद्धा समझते हैं। बार-बार मुझे कुल्हाड़ा दिखाते हैं (यहाँ लक्ष्मण जी ने परशुराम जी के फरसे को 'कुल्हाड़ा' कहकर उनका और अधिक अपमान कर दिया है)। ऐसा लगता है जैसे आप अपनी फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया नहीं है, जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाती है (नष्ट हो जाती है)। आपके पास कुल्हाड़ा और धनुष-बाण देखकर ही मैं आपसे कुछ अभिमान से बोला था। आप भृगुवंशी हैं और यज्ञोपवीत धारण किए हुए हैं। इसलिए जो कुछ आप कह रहे हैं, उसे मैं अपना क्रोध रोककर सह लेता हूँ। हमारे कुल में देवता, ब्राह्मण, भगवान् के भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती है अर्थात् इन्हें नहीं मारा जाता है; क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे पराजित होने पर अपकीर्ति होती है। इसलिए यदि आप मुझे मारें तो भी मैं आपके चरणों में ही शीश झुकाऊँगा। आपका एक-एक वचन ही करोड़ों वज्रों की मार के समान है, धनुष-बाण और

ये कुल्हाड़ा तो आप बेकार ही धारण करते हैं। आपके धनुष-बाण और कुल्हाड़े को देखकर मैंने आपसे कुछ अनुचित कह दिया हो तो उसे क्षमा कीजिए।

लक्ष्मण जी के मुख से इस प्रकार की बातों को सुनकर परशुराम जी धीर-गंभीर होकर बोले।

4. **कौसिक सुनहु ·············· कायर कथहिं प्रतापु।।**

भावार्थ–लक्ष्मण जी के बहुत ही कटु वचन सुन-सुनकर परशुराम जी का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। वे विश्वामित्र जी से कहने लगे–हे कौशिक (विश्वामित्र)! सुनो। यह बालक (लक्ष्मण) अत्यंत कुबुद्धि और कुटिल है। काल के वशीभूत होकर यह अपने कुल का घातक बन रहा है। सूर्यवंशरूपी जो पूर्णचंद्र उदित है, यह (लक्ष्मण) उसका कलंक बनना चाहता है। यह अत्यंत उद्दंड, निरंकुश, मूर्ख और निडर है।

अभी पलभर में ही यह काल का ग्रास बन जाएगा अर्थात् इसकी मृत्यु निश्चित है। मैं आपसे कह रहा हूँ, फिर मुझे दोष मत देना। यदि आप लक्ष्मण को मृत्यु से बचाना चाहते हैं तो मेरे प्रताप, बल और क्रोध का वर्णन करके इसे (लक्ष्मण जी को) मुझसे हठ करने के लिए मना कर दें।

परशुराम जी की बातें सुनकर लक्ष्मण जी फिर बोल पड़े। वे कहने लगे–हे मुनि! आपका सुयश आपके अलावा दूसरा कौन वर्णन कर सकता है? आपने अभी तक अनेक बार अपनी करनी अपने ही मुख से बखानी है। यदि आपको फिर भी संतोष न हुआ हो तो और भी कह डालिए। अपना क्रोध रोककर असहनीय दुःख न उठाइए। आप वीर हैं, धैर्य धारण करते हैं, आपको किसी प्रकार का क्षोभ भी नहीं है; परंतु आप मुझे गाली दे रहे हैं, वह आपको शोभा नहीं देता है।

शूरवीर तो युद्ध में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं, वे अपनी वीरता का बखान नहीं करते हैं। शत्रु को युद्ध के लिए आया जानकर कायर व्यक्ति ही अपनी वीरता की डींग मारा करते हैं।

5. **तुम्ह तौ कालु ·············· न बूझ अबूझ।।**

भावार्थ– लक्ष्मण जी ने आगे कहा–आप तो मानो बार-बार काल को आवाज़ लगाकर उसे मेरे लिए आमंत्रित करते हैं। लक्ष्मण जी की इतनी कटु बातों को सुनकर परशुराम जी क्रोधवश अपना फरसा सँभालने लगे और जनसामान्य की ओर देखकर कहने लगे–अब आप लोग मुझे किसी प्रकार का दोष न दें। यह कड़वी बात कहने वाला बालक मारे जाने के ही योग्य है। इसे बालक समझकर मैंने बहुत छोड़ा (बचाया), पर अब वास्तव में यह मेरे फरसे से मरने ही वाला है। परशुराम जी को अत्यंत क्रोधित देखकर विश्वामित्र जी कहने लगे–अपराध क्षमा कीजिए। बालकों के दोष और गुणों की ओर साधु लोग ध्यान नहीं देते हैं। परशुराम जी कहने लगे–मेरे हाथ में तीव्र धारयुक्त फरसा है, मेरा स्वभाव क्रोधी है और मुझमें दया-भाव भी नहीं है। ऐसे में यह गुरुद्रोही और अपराधी मेरे सामने है। मुझे मेरी बातों का उत्तर दे रहा है। यदि मैं अभी तक इसे छोड़े हुए हूँ तो केवल इसलिए कि मुझे आपसे (विश्वामित्र से) प्रेम है, अन्यथा अपने तीव्र फरसे से लक्ष्मण को काटकर शीघ्र ही कम परिश्रम में ही गुरु के ऋण से उऋण हो जाता।

विश्वामित्र जी मन-ही-मन हँसकर विचार करने लगे कि परशुराम जी को केवल हरा-ही-हरा सूझ रहा है, अर्थात् अपने अभिमान के कारण सभी जगह विजयी होने के कारण ये राम-लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय समझ रहे हैं। वास्तव में ये तो लोहे की बनी हुई खड्ग के समान हैं; कोई रस से बनी हुई खाँड (शक्कर/मीठा पदार्थ) नहीं (जो मुँह में लेते ही गल जाए)। परशुराम जी अब भी नासमझ बने हुए हैं, इनके (राम-लक्ष्मण) प्रभाव को नहीं समझ पा रहे हैं।

6. **कहेउ लखन मुनि ·········· बोले रघुकुलभानु।।**

भावार्थ– लक्ष्मण जी परशुराम जी से कहने लगे–हे मुनि! आपके शील से सभी परिचित हैं। आपका शील तो विश्वप्रसिद्ध है। आप अपने माता-पिता से तो भली-भाँति उऋण हो ही गए हैं। अब गुरु का ऋण रह गया है, जिसका आपके मन में बड़ा सोच है (चिंता है)। वह गुरु का ऋण मानो हमारे ही मत्थे मढ़ा था। आपने यह ऋण बहुत दिनों से नहीं चुकाया है, इसका ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब आप किसी हिसाब करने वाले व्यक्ति को बुलाकर लाइए। तब मैं तुरंत थैली खोलकर दे दूँ।

लक्ष्मण जी की इतनी कड़वी बातें सुनकर परशुराम जी और क्रोधित हो गए। उन्होंने अपना फरसा सँभाला। यह देखकर जनक जी की सारी सभा में हाय-हाय मच गई। लक्ष्मण जी ने आगे कहा–हे भृगुश्रेष्ठ! आप मुझे फरसा दिखा रहे हैं? पर हे राजाओं के शत्रु! मैं ब्राह्मण समझकर आपको छोड़ रहा हूँ। आपको अभी तक रण में विजयी होने वाले बलवान् वीर नहीं मिले हैं। हे ब्राह्मण देव! आप तो केवल घर ही में बड़े हैं, अर्थात् आप अपनी ही दृष्टि में बड़े हैं। लक्ष्मण जी की इन बातों को सुनकर सभा में बैठे हुए सभी लोग 'अनुचित है', 'अनुचित है' कहकर चिल्लाने लगे। यह देखकर श्रीराम जी ने इशारे से लक्ष्मण जी को रोक दिया। लक्ष्मण जी के उत्तर, जो आहुति के समान थे, परशुराम जी की क्रोधरूपी अग्नि को भड़काने के लिए पर्याप्त थे; किंतु रघुवंशी श्रीराम अग्नि को शांत करने वाले जल के समान शांत वचन बोलने लगे।

शब्दार्थ

संभुधनु = शिव धनुष। **भंजनिहारा** = तोड़ने वाला। **अरि** = शत्रु। **बिलगाऊ** = अलग। **अवमाने** = अपमान करते हुए। **लरिकाई** = बचपन में। **छति** = हानि। **जून** = जीर्ण, पुराना। **रोसू** = गुस्सा। **सठ** = दुष्ट। **जड़** = मूर्ख। **छेदनिहारा** = काटने वाला। **बिलोकु** = देखकर। **गर्भन्ह** = गर्भ के। **अर्भक** = बच्चे। **बिहसि** = हँसकर। **मृदु** = कोमल। **कुठारु** = कुल्हाड़ी, फरसा। **फूँकि** = फूँक से। **पहारू** = पहाड़। **कुम्हड़बतिया** = काशीफल का फल। **सरासन** = धनुष। **रिस** = गुस्सा। **सुराई** = वीरता। **छमहु** = क्षमा करें। **कौसिक** = विश्वामित्र। **निज** = अपने। **कलंकू** = दाग। **निरंकुसु** = उद्दंड। **असंकू** = शंका रहित। **प्रतापु** = यश। **दुसह** = असहनीय दुःख। **गारी** = गाली। **कायर** = डरपोक। **हाँक** = जबरदस्ती। **घोरा** = भयंकर। **उरिन** = ऋण मुक्त। **काढ़ा** = निकालना। **व्यवहरिआ** = हिसाब करने वाला। **बिप** = ब्राह्मण। **सुभट** = योद्धा।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

1. **पद्यांश में किस-किसके मध्य संवाद है–**
   (क) श्रीराम और लक्ष्मण (ख) श्रीराम और परशुराम
   (ग) लक्ष्मण और परशुराम (घ) परशुराम और जनक।
2. **'नाथ' शब्द से किसे संबोधित किया गया है–**
   (क) श्रीराम को (ख) लक्ष्मण को
   (ग) परशुराम को (घ) शिव को।

3. **शिव-धनुष तोड़ने वाले को श्रीराम ने क्या बताया–**
   (क) परशुराम का दास (ख) एक महान वीर
   (ग) एक अपराधी (घ) एक कायर व्यक्ति।
4. **परशुराम ने सेवक किसको कहा है–**
   (क) जो आज्ञा का पालन करता है
   (ख) जो सेवकाई करता है
   (ग) जो शत्रुता का कार्य करता है
   (घ) जो कभी दूर नहीं रहता।
5. **परशुराम के अनुसार शिव-धनुष तोड़ने वाला उनके लिए है–**
   (क) गुरु के समान पूज्य
   (ख) एक महान योद्धा
   (ग) सहस्रबाहु के समान शत्रु
   (घ) एक परम मित्र के समान प्रिय।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)।

(2) लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

1. **लक्ष्मण ने हँसकर परशुराम से क्या कहा–**
   (क) आप बहुत भोले हैं
   (ख) हमारी दृष्टि में सभी धनुष समान हैं
   (ग) आपका धनुष बहुत कमज़ोर था
   (घ) आप धनुष उठाने योग्य नहीं हैं।
2. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम का क्रोध अकारण है; क्योंकि–**
   (क) धनुष शिव जी का टूटा, परशुराम का नहीं
   (ख) धनुष तोड़ना सीता-स्वयंवर की शर्त थी
   (ग) श्रीराम ने तो धनुष को केवल छुआ ही था कि वह टूट गया
   (घ) धनुष तोड़ना कोई अपराध नहीं।
3. **परशुराम की विशेषता नहीं है–**
   (क) बालब्रह्मचारी (ख) अतिक्रोधी
   (ग) क्षत्रियकुल द्रोही (घ) राजाओं के राजा।
4. **परशुराम लक्ष्मण का वध क्यों नहीं कर रहे हैं–**
   (क) कमज़ोर समझकर (ख) बालक समझकर
   (ग) अज्ञानी समझकर (घ) राजकुमार समझकर।
5. **परशुराम ने अपने फरसे से किसकी भुजाओं को काटा–**
   (क) रावण की (ख) मारीच की
   (ग) सहस्रबाहु की (घ) सुबाहु की।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)।

(3) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
(CBSE 2015; CBSE SQP 2023-24)

1. **परशुराम बार-बार अपना कुठार किसे और क्यों दिखा रहे हैं?**
   (क) राम को भयभीत करने के लिए
   (ख) लक्ष्मण को भयभीत करने के लिए
   (ग) विश्वामित्र को भयभीत करने के लिए
   (घ) महाराज जनक को भयभीत करने के लिए।
2. **निम्नलिखित पंक्तियों में से किस पंक्ति से लक्ष्मण की शक्तिशाली होने का पता चलता है–**
   (क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
   (ख) पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
   (ग) देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
   (घ) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
3. **रघुकुल में किन-किन के प्रति अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जाता है?**
   (क) देवता, ब्राह्मण, ईश्वर भक्त और गाय पर
   (ख) स्त्रियों, बच्चों, ईश्वर भक्त और गाय पर
   (ग) देवता, राजा, वीर योद्धा और स्त्रियों पर
   (घ) स्त्रियों, बच्चों, राजा और गाय पर।
4. **'बिहसि लखन बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी' यह कथन .... का उदाहरण है।**
   (क) व्यंग्य का (ख) हास्य का
   (ग) क्रोध का (घ) वैराग्य का।
5. **उपर्युक्त पद्यांश में लक्ष्मण के चरित्र की कौन-सी विशेषता उजागर होती है?**
   (क) वीरता (ख) धैर्य
   (ग) शिष्टता (घ) विनम्रता।

उत्तर— 1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (क) 5. (क)।

(4) लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।
(CBSE 2015)

1. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम की किस बात का वर्णन कोई अन्य नहीं कर सकता–**
   (क) सुंदरता का (ख) बल का
   (ग) सुयश का (घ) वीरता का।
2. **परशुराम ने अपने मुँह से अनेक बार किसका वर्णन कर लिया है–**
   (क) अपनी करनी का (ख) अपनी सुंदरता का
   (ग) शिव के धनुष का (घ) यज्ञशाला का।
3. **लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया–**
   (क) आप अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन रहे हैं
   (ख) आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं
   (ग) जो गरजते हैं वे बरसते नहीं
   (घ) नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
4. **गाली देना किसे शोभा नहीं देता–**
   (क) लक्ष्मण को (ख) परशुराम को
   (ग) श्रीराम को (घ) राजा जनक को।
5. **लक्ष्मण ने परशुराम के किन गुणों की ओर संकेत किया है–**
   (क) आत्मप्रशंसक
   (ख) वीर और धीर
   (ग) क्रोधी और बड़बोला
   (घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)।

(5) सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

1. **काव्यांश में कौन-सा छंद है–**
   (क) दोहा (ख) चौपाई
   (ग) सोरठा (घ) कुंडलिया।
2. **काव्यांश में कौन किससे कह रहा है–**
   (क) श्रीराम लक्ष्मण से (ख) परशुराम श्रीराम से
   (ग) लक्ष्मण परशुराम से (घ) परशुराम लक्ष्मण से।
3. **शूरवीर की क्या विशेषता है–**
   (क) वह युद्ध से भयभीत हो जाता है
   (ख) अपनी वीरता का बखान करता है
   (ग) शत्रु को बहुत गालियाँ देता है
   (घ) वीरता दिखाता है, उसका बखान नहीं करता।
4. **युद्ध में शत्रु को सामने देखकर कायर क्या करता है–**
   (क) अपने प्रताप का बखान करता है
   (ख) वीरता से लड़ता है
   (ग) शत्रु से बिलकुल नहीं डरता
   (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं।
5. **काव्यांश की भाषा क्या है–**
   (क) ब्रजभाषा (ख) खड़ीबोली
   (ग) अवधी भाषा (घ) गुजराती।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

(6) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा।।
(CBSE 2015, 17)

1. **'तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा' में कौन काल को हाँक लगा रहा है–**
   (क) परशुराम (ख) लक्ष्मण (ग) श्रीराम (घ) विश्वामित्र।
2. **लक्ष्मण के कठोर वचन सुनकर परशुराम ने क्या प्रतिक्रिया की–**
   (क) लक्ष्मण को गाली देने लगे
   (ख) श्रीराम से लक्ष्मण की शिकायत की
   (ग) अपने कानों पर हाथ रख लिया
   (घ) लक्ष्मण को मारने के लिए फरसा उठा लिया।
3. **परशुराम ने लोगों से उन्हें किस बात का दोष न देने के लिए कहा–**
   (क) शिव-धनुष तोड़ने का
   (ख) राजा जनक को धमकाने का
   (ग) लक्ष्मण का वध करने का
   (घ) श्रीराम से युद्ध करने का।
4. **परशुराम के अनुसार लक्ष्मण वध के योग्य क्यों हैं–**
   (क) वह बहुत क्रूर हैं
   (ख) वह कटुभाषी हैं
   (ग) उन्होंने धनुष तोड़ने का अपराध किया है
   (घ) उन्होंने अपने गुरु का अपमान किया है।
5. **परशुराम के क्रोध का क्या कारण था–**
   (क) लक्ष्मण उन्हें कठोर वचन कह रहे थे
   (ख) राजा जनक ने उनका सम्मान नहीं किया था
   (ग) उन्हें यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया गया था
   (घ) उनके गुरु का अपमान किया गया था।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क)।

(7) नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।
(CBSE SQP 2021)

1. **परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम ने उनसे क्या कहा–**
   (क) धनुष तोड़नेवाला कोई राजकुमार है
   (ख) धनुष तोड़नेवाला आपका कोई सेवक होगा
   (ग) धनुष तोड़नेवाला आपका कोई मित्र होगा
   (घ) वह धनुष अपने आप टूट गया।
2. **स्वयंवर में जो धनुष टूट गया था, वह किसका धनुष था–**
   (क) राजा जनक का
   (ख) राम का
   (ग) विष्णु जी का
   (घ) परशुराम जी के आराध्य शिवजी का।
3. **शिव-धनुष टूटने पर परशुराम क्रोधित क्यों हुए–**
   (क) परशुराम जी शिव-भक्त थे और उन्हें शिव-धनुष प्रिय था
   (ख) उन्हें सीता-स्वयंवर में आमंत्रित नहीं किया गया था
   (ग) वे क्षत्रिय कुल के विद्रोही थे
   (घ) परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे।
4. **'भृगुकुलकेतू' किसे कहा गया है–**
   (क) लक्ष्मण को (ख) राजा जनक को
   (ग) परशुराम को (घ) विश्वामित्र को।
5. **शिव-धनुष तोड़नेवाले की तुलना परशुराम ने अपने किस शत्रु से की है–**
   (क) कर्ण (ख) सहसबाहु
   (ग) घटोत्कच (घ) दुर्योधन।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(8) कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जन बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड़ जी कें।।
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ां।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देऊँ मैं थैली खोली।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही।।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लाखनु नेवारे।
(CBSE 2021 Term-1)

1. **लक्ष्मण जब परशुराम को व्यंग्य में कह रहे हैं कि आप माता-पिता के ऋण से अच्छी तरह उऋण हुए तो इसके पीछे क्या कारण है–**
   (क) परशुराम अपने माता-पिता के सम्मान का माध्यम बने
   (ख) परशुराम ने अपने माता-पिता को सुख-समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान किया
   (ग) परशुराम अपने माता-पिता की मृत्यु का कारण बने
   (घ) परशुराम अपने माता-पिता के लिए अपयश लाने वाले बने।

2. **लक्ष्मण के कड़वे वचनों को सुन परशुराम ने कौन-सी प्रतिक्रिया की–**
(क) अपने परशु को संभाल कर आगे बढ़े
(ख) अपने स्थान पर अवाक खड़े रहे
(ग) आगे बढ़कर लक्ष्मण पर वार किया
(घ) विश्वामित्र से शिकायत करते हुए बोले।
3. **लक्ष्मण का परशुराम के प्रति व्यवहार है–**
(क) आदरसूचक (ख) अपमानजनक
(ग) सम्मानजनक (घ) कुटिलता-भरा।
4. **परशुराम को 'भृगुबर' क्यों कहा जा रहा है–**
(क) उनके क्रोधी स्वभाव के कारण
(ख) उनके बल और पराक्रम के कारण
(ग) उनके परशु का नाम था
(घ) वे भृगु कवि के वंशज थे।
5. **'को नहिं जान बिदित संसारा' का तात्पर्य है–**
(क) संसार भर से यह बात छिपी है
(ख) संसार भर में इसे कौन नहीं जानता
(ग) संसार से यह बात लगभग विलुप्त है
(घ) संसार में किसे अपनी जान प्रिय नहीं है।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ किस ग्रंथ से लिया गया है–**
(क) महाभारत से (ख) श्रीरामचरितमानस से
(ग) कवितावली से (घ) रामायण से।
2. **शिव-धनुष को किसने तोड़ा था–**
(क) लक्ष्मण ने (ख) श्रीराम ने
(ग) परशुराम ने (घ) सहस्रबाहु ने।
3. **परशुराम के क्रोधित होने का कारण था–** ***(CBSE 2023)***
(क) सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण का पहुँचना
(ख) लक्ष्मण द्वारा उनके गुरु शिव का धनुष तोड़ना
(ग) राम-लक्ष्मण द्वारा उनके प्रश्नों का जवाब न देना
(घ) राम द्वारा शिव-धनुष का भंग करना।
4. **'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' कविता के संदर्भ में शिव-धनुष टूटने की आवाज़ सुन परशुराम ने क्रोधित होते हुए पूछा कि धनुष किसने तोड़ा? इसका उत्तर किसने और क्या दिया?** ***(CBSE 2023)***
(क) लक्ष्मण ने कहा कि शिव-धनुष उन्होंने तोड़ा है।
(ख) लक्ष्मण ने कहा कि शिव-धनुष राम ने तोड़ा है।
(ग) राम ने कहा कि शिव-धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा।
(घ) राम ने कहा कि शिव-धनुष को भंग करने वाला और कोई नहीं मैं ही हूँ।
5. **परशुराम ने सभा में अपने विषय में क्या बताया–**
(क) मैं बालब्रह्मचारी और अतिक्रोधी हूँ
(ख) क्षत्रियकुल का द्रोही हूँ
(ग) मैंने सहस्रबाहु की भुजाओं को काटा है
(घ) उपर्युक्त सभी।
6. **'छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू' कहकर लक्ष्मण क्या बताना चाहते हैं–**
(क) धनुष टूटने में श्रीराम का दोष नहीं है
(ख) धनुष श्रीराम ने ही तोड़ा है
(ग) धनुष छूने में कोई दोष नहीं है
(घ) धनुष तोड़ने वाला दोषी है।
7. **'गाधिसूनु' किसे कहा गया है–**
(क) जनक को (ख) परशुराम को
(ग) विश्वामित्र को (घ) वशिष्ठ को।
8. **धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने कैसे धमकाया–**
(क) जिसने धनुष तोड़ा है, वह सभा से अलग हो जाए
(ख) धनुष तोड़ने वाले को मैं जीवित नहीं छोड़ूँगा
(ग) धनुष तोड़ने वाला यहाँ से चला जाए
(घ) धनुष तोड़ने वाले को दंड दिया जाएगा।
9. **लक्ष्मण क्रोध दबाकर परशुराम की कड़वी बातें क्यों सहन कर रहे हैं–**
(क) उन्हें वीर समझकर
(ख) उन्हें वृद्ध समझकर
(ग) उन्हें ब्राह्मण समझकर
(घ) उन्हें बालब्रह्मचारी समझकर।
10. **परशुराम ने लक्ष्मण को क्या-क्या अपशब्द कहे–**
(क) मंदबुद्धि, कुलकलंक
(ख) कुटिल, निपट, काल के वशीभूत
(ग) निरंकुश, मूर्ख, निर्लज्ज
(घ) उपर्युक्त सभी।
11. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम ने कौन-सा ऋण उनके माथे मढ़ दिया है–**
(क) पिता का ऋण (ख) माता का ऋण
(ग) गुरु का ऋण (घ) ऋषियों का ऋण।
12. **लक्ष्मण के कुल में किस पर वीरता नहीं दिखाई जाती–**
(क) देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर
(ख) हाथी, घोड़ा, भैंसा और हिरन पर
(ग) नौकर, राक्षस, अन्यायी और कृपण पर
(घ) वीर शत्रु और आक्रांता पर।
13. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम का धनुष-बाण और फरसा धारण करना व्यर्थ है, क्योंकि–**
(क) उनका वचन ही करोड़ों वज्रों के समान है
(ख) वे इन अस्त्र-शस्त्रों को धारण करने योग्य नहीं हैं
(ग) वे शक्तिहीन और कायर हैं
(घ) वे बालब्रह्माचारी हैं।
14. **परशुराम को कही गई लक्ष्मण की कौन-सी बात लोगों को अनुचित लगी–**
(क) तुमने अपने पिता का ऋण नहीं उतारा है
(ख) तुम फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हो
(ग) तुम्हारा धनुष-बाण और फरसा व्यर्थ है
(घ) तुम्हें युद्ध में अच्छे योद्धा नहीं मिले, तुम घर के ही शेर हो।
15. **पाठ में 'रघुकुल भानु' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है–**
(क) श्रीराम के (ख) लक्ष्मण के
(ग) परशुराम के (घ) विश्वामित्र के।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं, उसके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : **राम के स्वभाव की विशेषताएँ**—राम विनम्र, मधुरभाषी और बड़ों का आदर करने वाले हैं। वे परशुराम के कठोर वचनों का बड़ी विनम्रतापूर्वक उत्तर देते हैं। अपने अपराध को स्वीकार करते हुए स्वयं को परशुराम का दास कहते हैं।

लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ— लक्ष्मण क्रोधी, कटुभाषी और उग्र स्वभाव के हैं। वे बहुत निडर और बड़बोले हैं। परशुराम जी को वे कड़वी-से-कड़वी बात कहते हैं और उनसे बिलकुल नहीं डरते हैं।

प्रश्न 2 : 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। ***(CBSE 2016, 17)***

उत्तर : 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर परशुराम की स्वभावगत/चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) वे मर्यादा का पालन करने वाले व्यक्ति हैं। बालक का वध न करने की बात कहना उनकी इस विशेषता का प्रमाण है।

(ii) वे बालब्रह्मचारी तथा अत्यंत क्रोधी हैं।

(iii) वे क्षत्रियों के घोर विरोधी और शत्रु हैं।

(iv) वे शिव के परमभक्त हैं।

(v) वे वीर, साहसी और परम दानी भी हैं, इसीलिए उन्होंने अनेक बार क्षत्रियों से पृथ्वी को जीतकर उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया था।

प्रश्न 3 : 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या विशेषताएँ बताईं? ***(CBSE 2017)***

उत्तर : लक्ष्मण ने शूरवीर या वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं—

(i) शूरवीर या वीर योद्धा देवता, ब्राह्मण, भगवान् के भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाते हैं।

(ii) वीर योद्धा रणभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं, वे अपनी वीरता का बखान नहीं करते हैं।

(iii) धीरता और संतोष वीरों का अनन्य गुण होता है, उन्हें अकारण ही क्रोध नहीं आता और यदि आता भी है तो वे क्रोध में भी विवेक नहीं खोते हैं।

(iv) गाली देना कायरों और दुर्बलों का अस्त्र है, वीर योद्धा दूसरों को गाली देकर अपमान नहीं करते, भले ही वह शत्रु ही क्यों न हो।

प्रश्न 4 : 'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता भी हो तो बेहतर है।' इस कथन पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए साहस और शक्ति का होना अनिवार्य है, लेकिन यदि इनके साथ विनम्रता न हो तो कभी-कभी ये गुण पतन और विनाश का कारण भी बन जाते हैं। उदाहरण के लिए लक्ष्मण और परशुराम के पास साहस और शक्ति तो थी, लेकिन विनम्रता नहीं थी; अतः वे दोनों छोटी-सी बात के लिए युद्ध पर उतारू हो गए। दूसरी ओर राम के पास शक्ति और साहस के साथ विनम्रता भी थी, इसलिए उन्होंने परशुराम जैसे क्रोधी को अपने सामने नतमस्तक कर दिया। अतः साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है।

प्रश्न 5 : परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूटने के कौन-कौन-से तर्क दिए?

उत्तर : लक्ष्मण जी ने परशुराम जी से कहा—मेरी दृष्टि में तो सभी धनुष एकसमान हैं। यह धनुष (शिवधनुष) तो बहुत पुराना था। श्रीराम ने उसे धोखे से छूकर देख लिया और यह उनके छूते ही टूट गया। इस प्रकार लक्ष्मण जी ने परशुराम जी को धनुष के पुराने होने का तर्क दिया।

प्रश्न 6 : 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में परशुराम ने अपने विषय में जो कहा, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : परशुराम जी ने अपने विषय में कहा—क्या तुम मुझे केवल मुनि ही समझते हो? मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। मैं संपूर्ण विश्व में क्षत्रियकुल के शत्रु के रूप में विख्यात हूँ। अपनी शक्ति के बल पर मैंने पृथ्वी को अनेक बार राजाओं से रहित कर दिया है और उसे ब्राह्मणों को दे दिया है। सहस्रबाहु की भुजाओं को मेरे ही फरसे ने काटा था। मेरा फरसा बड़ा भयानक है। हे राजकुमार! तू इस फरसे को देख। इसकी गर्जना से गर्भस्थ शिशु भी मर जाते हैं। इस प्रकार परशुराम जी ने सभा के समक्ष स्वयं को अत्यधिक निर्दयी, क्रोधी और बलशाली बताया।

प्रश्न 7 : परशुराम लक्ष्मण को वध योग्य बताने के लिए क्या-क्या तर्क देते हैं?

उत्तर : परशुराम लक्ष्मण को वध-योग्य बताने के लिए विश्वामित्र को अनेक तर्क देते हैं। वे कहते हैं कि यह बालक तो बहुत ही मूर्ख है। यह बेहद कुटिल है। इसे न तो किसी का डर है, न ही शर्म है, यह अपने कुल का कलंक है। अभी क्षण भर में ही मैं इसे मार डालूँगा। वैसे ही क्षत्रिय राजकुमार होने से यह स्वाभाविक रूप से मेरा शत्रु है। यह सूर्यवंशरूपी चंद्रमा पर कलंक है। इन सभी कारणों से वे लक्ष्मण के वध का तर्क देते हैं।

प्रश्न 8 : 'अयमय खाँड़ न ऊखमय' से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : परशुराम जब विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत करते हुए कहते हैं कि मैं इसे आपके शील के कारण छोड़ रहा हूँ, अन्यथा थोड़े परिश्रम से ही अपने फरसे से इसे मारकर मैं अपने गुरु के ऋण से उऋण हो जाता। विश्वामित्र उनकी इस बात को सुनकर मन-ही-मन हँसते हुए सोचते हैं कि मुनि को हरा-ही-हरा सूझ रहा है। इन्हें यह नहीं मालूम है कि 'अयमय खाँड़ न ऊखमय' अर्थात् ये बालक लोहे की खाँड (तलवार) हैं, गन्ने की खाँड नहीं, जो मुँह में लेते ही गल जाएगी। परशुराम इस बालक की क्षमता को कम आँककर बड़ी भूल कर रहे हैं।

प्रश्न 9 : सहस्रबाहु कौन था? परशुराम ने अपने परशु की क्या विशेषता बताई?

उत्तर : सहस्रबाहु एक वीर क्षत्रिय राजा था। उसने परशुराम जी के पिता की कामधेनु का बलपूर्वक अपहरण कर लिया था। इससे क्रोधित होकर परशुराम जी ने उसका वध कर दिया था। परशुराम जी का परशु बहुत भयानक है। उसने सहस्रबाहु की भुजाओं को काटा है और उसकी घोर को सुनकर गर्भस्थ शिशु भी मर जाता है।

प्रश्न 10 : लक्ष्मण क्रोध रोककर परशुराम के कठोर वचनों को सह रहे थे—इस संबंध में लक्ष्मण ने अपने कुल की क्या मर्यादाएँ बताईं?

उत्तर : लक्ष्मण परशुराम के कठोर वचनों को सुनकर भी अपने क्रोध को रोक रहे थे; क्योंकि उनके विरुद्ध शस्त्र उठाना उनके कुल की मर्यादा के अनुरूप न था। वे अपने कुल की मर्यादाएँ बताते हुए परशुराम से कहते हैं कि देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय पर हमारे कुल के व्यक्ति वीरता नहीं दिखाया करते हैं। इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने से अपयश मिलता है; अतः यदि आप मुझे मारेंगे तो भी मैं आपके पैर ही पड़ूँगा।

प्रश्न 11 : राम, लक्ष्मण और परशुराम में से किसका व्यवहार, आपको अधिक अच्छा लगता है? क्यों? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: हमें राम, लक्ष्मण एवं परशुराम तीनों में से श्रीराम का व्यवहार सबसे अधिक अच्छा लगता है; क्योंकि वह अत्यंत गंभीर और विनम्र स्वभाव के हैं। वे विपरीत परिस्थिति में भी अपने मृदु व्यवहार का त्याग नहीं करते और परिस्थिति को सँभालने का प्रयास करते हैं। वे बड़ों का आदर और उनकी आज्ञाओं का पालन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। उनका यह व्यवहार सभी के लिए प्रेरणादायी है। वे अपनी गलतियों को स्वीकारकर क्षमा माँगने के लिए तत्पर रहते हैं।

प्रश्न 12 : परशुराम के क्रोध करने का मूल कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: परशुराम जी शिव भक्त थे। वे शिव को अपना गुरु मानते थे। परशुराम जी के क्रोध का मूल कारण था– राम द्वारा उनके गुरु भगवान शंकर का धनुष भंग करना। यह समाचार पाते ही वे अत्यंत क्रोधित होकर जनक की सभा में जा पहुँचे। वहाँ राम-लक्ष्मण से उनका सामना होता है। लक्ष्मण उनके क्रोध को देखकर भी उनसे तर्क-वितर्क में उलझकर उद्दंडतापूर्वक बात करते हैं, फरसे का डर दिखाने पर भी नहीं डरते, अविचल मुसकुराते रहते हैं, इन बातों ने परशुराम का क्रोध और बढ़ा दिया था।

प्रश्न 13 : परशुराम ने सभा से किस कार्य का दोष उन्हें न देने के लिए कहा? ***(CBSE 2015)***

उत्तर: परशुराम ने सभा से कहा कि यह बालक लक्ष्मण बहुत कटुवादी है। मैं अपने फरसे से अभी इसका वध कर दूँगा। इसके लिए आप लोग मुझे दोष न देना; क्योंकि यह कटुवादी वध-योग्य है।

प्रश्न 14 : 'गाधिसूनु' किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन-ही-मन मुसकरा रहे थे? ***(CBSE 2015, 16)***

उत्तर: 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में ऋषि विश्वामित्र को 'गाधिसूनु' कहा गया है। जब परशुराम ने विश्वामित्र से यह कहा कि मैं केवल आपके कारण ही लक्ष्मण का वध नहीं कर रहा हूँ तो विश्वामित्र मन-ही-मन हँसने लगे कि परशुराम श्रीराम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं, जबकि ये दोनों बालक लोहे की बनी हुई तलवारें हैं, गन्ने से बनी खाँड नहीं, जो मुँह में रखते ही गल जाएगी।

प्रश्न 15 : स्वयंवर-स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया? ***(CBSE 2016)***

उत्तर: परशुराम शिव भक्त थे, इसलिए उन्होंने शिव धनुष तोड़ने वाले को धमकाते हुए कहा कि जिस किसी ने भगवान शिव के इस धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान ही मेरा शत्रु है। यदि शिव के धनुष को तोड़ने वाला इस सभा से अलग नहीं हुआ तो सभा में उपस्थित सभी राजागण मेरे हाथों मृत्यु को प्राप्त होंगे।

प्रश्न 16 : 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा'– के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर: श्रीराम अपने युग के सर्वश्रेष्ठ योद्धा थे, लेकिन उनमें अहंकार नहीं था। इस पंक्ति से उनकी विनम्रता के दर्शन होते हैं। वे अति विनम्र, अहंकार रहित, स्थिति को सँभालने में निपुण तथा बड़ों और गुरुजनों को सम्मान देने वाले हैं। क्रोधित परशुराम को शांत करने के लिए वे विनम्रता और आदरभाव से परिपूर्ण वचन 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' कहते हुए बिगड़ी बात को सँभालने का प्रयत्न करते हैं। राम को अहंकार छू भी नहीं पाया है। शिव धनुष को तोड़ने के बाद भी वे बेहद विनम्रता से परशुराम से बातें करते हैं। उनमें साहस और शक्ति के साथ विनम्रता भी है। उनका व्यक्तित्व दिव्यता को धारण किए हुए है।

प्रश्न 17 : 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर: परशुराम की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) परशुराम बहुत ही क्रोधी स्वभाव के हैं। वे छोटी-सी बात पर क्रुद्ध हो जाते हैं। स्वयंवर-स्थल पर आते ही वे क्रोध से लाल हो जाते हैं और अपना फरसा दिखाकर सबको धमकाते हैं।

(ii) वे बहुत अहंकारी हैं। वे अपनी वीरता का बखान करते हैं और सहस्रबाहु के वध की बात सभा में सबको बताते हैं।

प्रश्न 18 : लक्ष्मण और परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं में आप क्या अंतर पाते हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: पाठ के आधार पर लक्ष्मण और परशुराम के चरित्र में निम्नलिखित अंतर है–

लक्ष्मण का चरित्र–लक्ष्मण में वाक्चातुर्य एवं तर्कशीलता है, किंतु उनमें मुख से बड़ों की बराबरी करने का दोष भी है। वे ऐसे-ऐसे व्यंग्य-बाण छोड़ते हैं, कि परशुराम जी क्रोध से उफन पड़ते हैं। इस प्रसंग के आधार पर यह कहना गलत न होगा कि अगर श्रीराम जैसे विनम्र व संयमशील व्यक्ति बीच में न होते और विनम्रता के साथ परशुराम जी से क्षमा-याचना न करते तो जनक-दरबार किसी अप्रिय घटना का साक्षी बन जाता।

परशुराम का चरित्र—परशुराम महाक्रोधी, अहंकारी और आत्मप्रशंसक हैं। वे बहुत बड़बोले हैं। अपने बड़बोलेपन में वे अपना बड़प्पन भी भूल जाते हैं और लक्ष्मण जैसे बालक के साथ विवाद करने लगते हैं।

प्रश्न 19 : परशुराम ने अपनी किन विशेषताओं के उल्लेख द्वारा लक्ष्मण को डराने का प्रयास किया? ***(CBSE 2019)***

उत्तर: परशुराम ने कहा कि तुम मुझे केवल मुनि ही मत समझो। मैं बाल ब्रह्मचारी और बहुत क्रोधी हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल से कई बार पृथ्वी को जीतकर ब्राह्मणों को दे दिया। मैं क्षत्रियकुल का द्रोही हूँ। सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला मेरा फरसा बहुत भयानक है।

प्रश्न 20 : परशुराम के प्रति लक्ष्मण के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर: परशुराम के प्रति लक्ष्मण का व्यवहार अपमानजनक है। वे परशुराम के गुरु शिव के धनुष को बच्चों के खेलने का धनुष बताते हैं। उनपर व्यंग्य बाण चलाते हैं। वे परशुराम को घर का ही शेर कहकर अपमानित करते हैं। हमारे विचार से लक्ष्मण का यह व्यवहार बहुत अनुचित है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

1. **लक्ष्मण ने हँसकर परशुराम से क्या कहा–**
   (क) आप बहुत भोले हैं
   (ख) हमारी दृष्टि में सभी धनुष समान हैं
   (ग) आपका धनुष बहुत कमज़ोर था
   (घ) आप धनुष उठाने योग्य नहीं हैं।
2. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम का क्रोध अकारण है; क्योंकि–**
   (क) धनुष शिव जी का टूटा, परशुराम का नहीं
   (ख) धनुष तोड़ना सीता-स्वयंवर की शर्त थी
   (ग) श्रीराम ने तो धनुष को केवल छुआ ही था कि वह टूट गया
   (घ) धनुष तोड़ना कोई अपराध नहीं।
3. **परशुराम की विशेषता नहीं है–**
   (क) बालब्रह्मचारी (ख) अतिक्रोधी
   (ग) क्षत्रियकुल द्रोही (घ) राजाओं के राजा।
4. **परशुराम लक्ष्मण का वध क्यों नहीं कर रहे हैं–**
   (क) कमज़ोर समझकर (ख) बालक समझकर
   (ग) अज्ञानी समझकर (घ) राजकुमार समझकर।
5. **परशुराम ने अपने फरसे से किसकी भुजाओं को काटा–**
   (क) रावण की (ख) मारीच की
   (ग) सहस्रबाहु की (घ) सुबाहु की।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ किस ग्रंथ से लिया गया है–**
   (क) महाभारत से (ख) श्रीरामचरितमानस से
   (ग) कवितावली से (घ) रामायण से।
7. **लक्ष्मण ने शिवधनुष का अपमान क्या कहकर किया–**
   (क) हमने बचपन में ऐसे छोटे-छोटे बहुत धनुष तोड़े हैं
   (ख) यह धनुष बहुत पुराना है
   (ग) हमारी दृष्टि में यह एक सामान्य धनुष है
   (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं।
8. **लक्ष्मण के अनुसार परशुराम ने कौन-सा ऋण उनके माथे मढ़ दिया है–**
   (क) पिता का ऋण (ख) माता का ऋण
   (ग) गुरु का ऋण (घ) ऋषियों का ऋण।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं, उसके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।**
10. **'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या विशेषताएँ बताईं?**
11. **सहस्रबाहु कौन था? परशुराम ने अपने परशु की क्या विशेषता बताई?**
12. **लक्ष्मण और परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं में आप क्या अंतर पाते हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।**